निजी जीवन में ईमानदारी और दयानतदारी, देश के हितों के प्रति लगन और बिना किसी फल की इच्छा किए बलिदान करने की तत्परता। जब तक प्रत्येक वर्ग के स्त्री-पुरुष, खेतों और कारखानों में, अपने अपने धन्धे में और व्यापार में और विशेषकर प्रशासन में या राजनीतिक क्षेत्र में काम करने वाले इन गुणों से सम्पन्न न हों, तब तक हम देश का कायाकल्प कैसे कर सकते हैं?

मैं अपने सभी देशवासियों की ओर से जलियांवाला बाग के और देश के अन्य भागों में हुए शहीदों का अभिवादन करती हूं जिन्होंने आजादी की रक्षा के लिए अपने प्राण न्यौछावर किए। मैं उन शहीदों को भी श्रद्धांजलि भेंट करती हूं जिन्होंने अन्य महाद्वीपों में अपनी बलि इसलिए दी, ताकि मनुष्य जाति स्वतन्त्रता, सम्मान और समानता से जीवन बिता सके।

शहीदों की महान आत्माएं हमें प्रेरणा देती रहें। हमारा मार्गदर्शन करती रहें।

जय हिन्द।

एक नया उजाला

एक दफा फिर हम सब इस ऐतिहासिक स्थान पर जमा हैं। यह 15 अगस्त हमारे इतिहास का एक मील होता है और हमको मौका मिलता है कि हम पीछे मुड़कर अपने इतिहास को देखें, अपनी प्राप्तियों पर, अपनी कमियों पर निगाह डालें और साथ ही साथ आगे भी देखें कि किस तरफ हमको जाना है, किस तरफ हम जा रहे हैं।

आज का दिन आप सबको मुबारक हो। यह वह दिन है, जब हम अपने महान नेताओं की तरफ देखते हैं, अपने शहीदों की तरफ देखते हैं, जिन्होंने अपनी जान, अपना सुख, अपना सब कुछ देश के कारण बलिदान किया। महात्मा गांधी को तो हम देश के पिता कहते हैं। लालकिले का नाम सुनते ही हमको नेताजी सुभाष बोस भी याद आते हैं और भारत के कोने-कोने में नेहरू जी की निशानी और याद है।

50 वर्ष हुए जलियांवाला बाग का काण्ड हुआ, जहां बहुत बड़ी संख्या में बूढ़े, जवान, बच्चे, औरत, मर्द गोली चलने से मरे। वह हमारी आजादी में एक नया मोड़ था। इस साल हमने उसकी 50वीं बरसी मनाई। उसके बाद रावी के तट पर हमने पूर्ण स्वराज्य का प्रण लिया और फिर कराची में, लखनऊ में, आवड़ी में, भुवनेश्वर में अपनी नीति की तरफ पैर जमाकर हम आगे बढ़े। और देश किस दिशा में जाएगा, वह रास्ता हमने नापा।

हम सबको मालूम है कि इन वर्षों में क्या-क्या इस देश में हुआ। अनाज की पैदावार बढ़ी। हमने कोशिश की कि जमींदारी को मिटाकर जो सबसे दबे हमारे किसान थे,

---

15 अगस्त, 1969 को स्वतंत्रता दिवस पर लाल किले के परकोटे से भाषण

उनको कुछ राहत दें। उद्योग के क्षेत्र में भी केवल उन्नति ही नहीं हुई, बल्कि एक मायने में सारे उद्योग आजादी के बाद ही स्थापित हुए। उसमें भी हमारी कोशिश रही कि बड़े-बड़े उद्योग सरकारी क्षेत्र में रखें, एकाधिकार को बन्द करें, लेकिन हमें मालूम है कि ऐसा कुछ हद तक ही हो पाया है। बहरहाल, सार्वजनिक क्षेत्र में बड़े-बड़े उद्योग आरम्भ हुए, चालू हो रहे हैं और कई जगह पर कई आवाजें उनकी आलोचना भी करती हैं, लेकिन अगर कोई ईमानदारी से देखे तो मालूम होगा कि अभी तक ये उद्योग बहुत अच्छी तरह से चल रहे हैं।

जो हमारे किसान भाई हैं, वे तो खूब अच्छी तरह से जानते हैं कि उनको इससे क्या लाभ पहुंचा है। पानी की, बिजली की और बहुत सी उनकी आवश्यकताएं पूरी हुई हैं, लेकिन हमको यह भी मालूम है कि कुछ थोड़े से उद्योग हैं, जो जैसे चलने चाहिएं, वैसे नहीं चल रहे हैं, लेकिन हम पूरी कोशिश में हैं कि उनमें भी सुधार लाएं। क्योंकि मैं समझती हूं कि यह सरकारी चीज नहीं, बल्कि जनता की जायदाद है और जितनी जल्दी इनमें मुनाफा होगा, जितना ये अच्छी तरह से चलेंगे, उतना ही लाभ हमारी जनता को पहुंचेगा।

हरेक दिशा में हमारा देश आगे बढ़ रहा है। बीच में जब संकट आया—चाहे सीमा पर युद्ध का संकट आया, चाहे देश के भीतर सूखे का संकट आया, चाहे जो दंगे होते हैं, और तरह की गड़बड़ें होती हैं—उस सबसे देश को हानि जरूर हुई। लेकिन मैं मानती हूं कि उससे हमारा अनुभव बढ़ा, हमने कुछ सीखा और हमने कदम और जोरों से और मजबूती से आगे बढ़ाया।

आज हम विश्वास कर सकते हैं कि अन्धेरे से भारत निकला। शायद पहली दफा इन पिछले तीन-चार साल में हम और आप सूर्य की रोशनी में बैठे हैं और यह रोशनी है जो हमारे देश को उजाला दे रही है। लेकिन जहां बहुत क्षेत्रों में बहुत घरों में, चन्द शहरों में उजाला है, हम कैसे भूलें कि बहुत से अन्धेरे घर और भी हैं। हम कैसे भूलें उन किसानों को जिनकी जमीन पर सिंचाई नहीं होती ? हम कैसे भूलें अपने उन करोड़ों हरिजन भाई-बहनों को या गिरिजन भाई-बहनों को या पिछड़ी जाति के भाई बहनों को या उन्हें जो पहाड़ में रहते हैं या उन्हें जो जंगल में रहते हैं, हमारे आदिवासी भाई और बहन; उनके घरों में यह आजाद भारत का उजाला वैसे नहीं चमक रहा है जैसी हमारी आशा थी, जैसा हमने उनको वायदा किया था कि आजादी के बाद उनको रोशनी मिलेगी।

यह सब काम हमारे सामने आगे करने को हैं। लेकिन मैं यह भी कह सकती हूं कि उस रास्ते में हम चलें। और समाजवाद के रास्ते पर और आगे बढ़ने के लिए मजबूती से कदम उठाने पड़ेंगे। यह रास्ता भारत की जनता का चुना हुआ, भारत के लोकतन्त्र का चुना रास्ता था और है और उसी रास्ते का एक कदम अभी हाल में लिया गया। आप सबको मालूम है कि वह क्या है। वह था कुछ बैंकों का राष्ट्रीयकरण। मुझे मालूम है कि इस कदम का कितना बड़ा स्वागत जनता में हुआ। मुझे मालूम है कि कितने छोटे और बड़े लोग मेरे पास आए या मुझे लिखा या सन्देश भेजा मुझे बताने के लिए कि यह कदम एक ठीक कदम है।

फिर भी कितने ही लोग बाकी हैं जिनके लिए काम करना है । मेरे पास रिक्शा वाले आए, तांगे वाले आए, पत्थर तोड़ने वाले आए । ये सब लोग आज आजाद भारत के शहरों में सबसे अधिक कठिनाई आज भी सहते हैं, लेकिन इस नए उजाले में उनको हमें इन सब आशाओं में उठाना है । यह नहीं कि एकदम उनकी बहुत सी मदद हो जाएगी, लेकिन नए रास्ते दिखाकर शायद वे भी अपने जीवन में कुछ सुधार ला सकें और यह भी हो सकता है कि अपने पेशों को बदलने की कोशिश करें । हमें बेरोजगारी का मसला भी हल करना है और सब लोगों को एक सा मौका देना है ।

इस तरह से बहुत से काम हो सकते हैं, जिसे समाज, सरकार, पड़ोसी, सबको मिलकर इन पिछड़े हुए लोगों की मदद करनी है और उनको एक नया जीवन देना है । हम आगे बढ़ रहे हैं, लेकिन जैसा कि मैंने कहा कि बहुत दफा हिंसा होती है या हमारे बीच में जो अल्पसंख्यक जातियां हैं, उनके विरुद्ध कुछ न कुछ ऐसी कारवाइयां होती हैं, कुछ शक पैदा होते हैं, कुछ गुस्सा बढ़ता है, जिससे हमारी एकता भंग होती है, जिससे हमारे देश की शांति भंग होती है । और हमको मालूम है कि शांति भंग होगी, तो पैदावार नहीं बढ़ सकती है । हरेक वर्ग के सामने कुछ परेशानियां और कुछ कठिनाइयां हैं और जैसे-जैसे हम आगे बढ़ते हैं, वैसे-वैसे ही नई कठिनाइयां आती हैं और उनका हमें सामना करना होता है । इसके लिए हमें सारी ताकत चाहिए और वह ताकत तभी मिल सकती है, जब हम सब मिलकर एक-दूसरे की परेशानियों का सामना कर सकें ।

बैंकों का राष्ट्रीयकरण हुआ, तो कुछ ऐसी हवा उड़ाई गई, जसे किसी वर्ग के खिलाफ यह काम हो रहा हो । मैं साफ कह देना चाहती हूं, कि हम किसी के खिलाफ कोई काम नहीं करना चाहते । हम चाहते हैं कि सब मिलकर चलें । लेकिन जो लोग हमारे देश में थोड़े से धनी हैं या पूंजीपति हैं, उनसे मैं स्पष्ट कहना चाहती हूं कि यह जो कदम हम उठा रहे हैं, यह उनके विरुद्ध नहीं है । यह तो जनता के हक में है और जो चीज जनता के हक में है, वह उनके हक में भी है । उनको इसी दृष्टि से इस कदम को और जो भी देश में हुआ, उसे देखना चाहिए ।

जब महात्मा गांधी ने आजादी का आन्दोलन शुरू किया, हमारे देश में बड़ी भारी क्रांति आई । लेकिन उसे नम्रता से उन्होंने किया और सबको मिलाकर किया । उन्होंने एक बाहरी राज्य को बदलकर अपने देश में एक स्वतन्त्र राज्य को जमाया । यह जो क्रांति हुई, वह खत्म नहीं हुई, क्योंकि बदलती हुई दुनिया में देश को और समाज को हर वक्त बदलते रहना है ।

मुझे दुख है कि कुछ आवाजें उठीं कि जो कदम हमने उठाए, वे शायद कुछ बाहरी शक्ति या बाहरी देश या बाहर की विचारधारा की वजह से हम कर रहे हैं । लेकिन मैं यह कहना चाहती हूं कि यह चीज हम यहां की जनता के और जो देश में लोकतन्त्र के हित में है कर रहे हैं । मुझे मालूम है कि भारत की जनता के दिल में लोकतन्त्र की भावना जमी हुई है । वे कभी कोई ऐसा काम नहीं करेंगे, जिससे किसी तरह की हानि हो या किसी तरह से हमारी स्वतन्त्रता पर आंच आए ।

हम जिस भी रास्ते से जा रहे हैं वह सही रास्ता है, भारत के इतिहास से, भारत की संस्कृति से निकला हुआ रास्ता है । हमने इतनी उन्नति की, तब भी क्या वजह है कि कुछ

लोगों के मन में अशांति है, असन्तोष है । इसी चीज की कमी रही । केवल उन्नति या विकास की कमी नहीं है, क्योंकि मनुष्य को किसी और चीज की भी जरूरत होती है । कभी-कभी मनुष्य के जीवन में समय आता है जब उसके दिल में उसके भीतर से एक क्रांति उभर आती है, जब वह अपनी आत्मा को और गहराई से पहचान सकता है, जब वह परिस्थितियों को और सफाई से देख सकता है । ऐसा ही समय भारत में आज आया है और एक नया दरवाजा खुला है । जिन लोगों को बन्द में रहने की आदत हो गई थी, वे उस ठंडी और ताजी हवा से कुछ चिंतित हुए हैं । लेकिन बहुत से ऐसे हैं जो घुटन होने से परेशान हो गए थे । उनको इस तेजी से सांस लेने से नई शक्ति मिली और मिलेगी ।

बाईस वर्ष हुए जब रात के अन्धेरे में भारत स्वतन्त्रता में जागा । उस समय पंडित जी ने कहा था कि हम अपने भविष्य से भेंट करने को निकल पड़े हैं । आज फिर एक वैसे ही मोड़ पर हम पहुंचे हैं और भविष्य तो सामने खुला पड़ा है । हमें देखना है कि हम नया रास्ता पकड़ें, ताकि हमारा देश तेजी से आगे बढ़े ।

यह गांधी शताब्दी का वर्ष है । गांधीजी के केवल कार्यक्रम ही हमको याद नहीं रखने हैं, बल्कि गांधीजी के क्या मूल आदर्श थे, क्या सिद्धान्त थे, वह हमको याद करने हैं और अपनी नई पीढ़ी को दिखाने हैं जिससे वे भी पहचान सकें कि एक ऐसा महापुरुष, एक ऐसा इंसान हमारे देश में पैदा हुआ ।

इस साल एक और बड़े नेता हमारे यहां आने वाले हैं । आप सब ने खान अब्दुल गफ्फार खां का नाम सुना होगा । वह गांधीजी के सबसे बड़े शिष्य थे । उनको जनता ने प्रेम से सरहदी गांधी जी कहा और अपने दिल में उनके लिए जगह दी । मुझे पूरी आशा है कि वह जब आएंगे उनका स्वागत हम सब दिल खोलकर करेंगे ।

यह युग विज्ञान का युग है । यह नौजवानों का भी युग है । उनको नए रास्तों पर चलना चाहिए । उन्हें किसी की तरफ नहीं देखना है, क्योंकि जो नसीहत लेने के लिए दूसरों की तरफ देखता है वह आजकल की दुनिया में पिछड़ जाता है । हमें नौजवानों को नया रास्ता दिखाना है । मुझे पूरा विश्वास है कि हमारे नौजवानों में वो हिम्मत और साहस है । साहस, आशा, आत्मनिभरता, आत्मविश्वास इन्हीं के बल पर हम और सारी जनता आगे बढ़ सकती है ।

हमने इस तिरंगे झण्डे को सलामी दी । यह एक चिन्ह है हमारे लोकतन्त्र का, और हमारे देश की एकता और शांति का, हमारे विकास और प्रगति का । इसीलिए हम सब लोगों को इन गुणों को अपने सामने रखना है । हमारा कर्त्तव्य है, कि जो यह शांति का चक्र है, जो सम्राट अशोक ने हमको दिया, इसकी शान हमेशा बनी रहे ।

आपके सामने खड़े होकर मैं आपको एक आश्वासन देना चाहती हूं कि मैं चाहे जहां भी रहूं, चाहे जो काम कर रही हूं, मेरे सामने जो सबसे महत्व का काम है, वह एक है—और वह जनता का, आप सब भाइयों और बहनों का हित है । और इस कार्य में एक बात मुझे आपके सामने रखनी है । गांधीजी ने हमको एक सुझाव दिया । उन्होंने कहा कि अगर कभी कोई कदम लेते हुए मन में शंका हो, तो जिस सबसे गरीब और कमजोर मनुष्य को जानते हो, उसकी ओर ध्यान करो । अगर उस कदम से उस मनुष्य पर अच्छा असर पड़ता है, कुछ लाभ मिलता है, तब वह कदम ठीक कदम है । उस रास्ते

पर चलोगे तो शंकाएं दूर हो जाएंगी और रास्ता साफ हो जाएगा। इस भावना को लेकर मैं आगे बढ़ना चाहती हूं। जैसा मैंने कहा हम आगे बढ़े हैं, लेकिन कुछ चीजों में फंस गए। बड़े-बड़े और छोटे-छोटे कार्यक्रमों में फंसकर जिस आम आदमी के लिए वे कार्यक्रम हो रहे थे, उसको भूल गए। कुछ आजकल की दुनिया में ही ऐसा है कि कहीं भी जाएं, बड़ी-बड़ी चीजें उठती हैं और लोग समझते हैं कि वह चीज ही एक ध्येय हो गया, यह नहीं देखते कि उससे जरूरतमन्द और गरीबों को क्या मिलता है।

आज हमने एक नया मोड़ लिया है। आज एक नया उदय हमारे देश में हुआ है। मुझे पूरा विश्वास है कि हमारे नौजवान चाहे वे किसान हों, चाहे मजदूर हों, चाहे हमारी फौज में हों, चाहे हमारे शहरों में रहने वाले हों, या देहात में रहनेवाले हों, वे सब इस नए रास्ते पर चलकर एक नया जोश अपने देश में लाएंगे, एक नई कुरबानी की भावना लाएंगे। यह समय है, जब हम सबको एक ही तरफ निगाह डालनी है और वह है भारत की जनता, भारत के गरीब। अगर हम उनको उठा सकते हैं, तभी हम सब उठ सकते हैं। अगर हम में शक्ति है और शक्ति के साथ करुणा है, शक्ति के साथ दूसरे की परिस्थितियों की जानकारी है, दूसरों की स्थिति पर सहानुभूति है, तब हम सब मिलकर इन बड़े-बड़े कामों को कर सकते हैं। मुझे पूरा विश्वास है कि भारत की जनता इसमें सदा एक रहेगी।

मैं आप सबको आज के दिन बधाई देती हूं। एक नए विकास की ओर हम चल पड़े हैं, एक नया दरवाजा खुला है, जिसकी ठंडी ताजी हवा हमारे चेहरे पर आ रही है। मैं आपसे यही कहूंगी कि यदि इस नई हवा से आप डरें नहीं, हिम्मत से आगे बढ़ें, तो बहुत कुछ इस दरवाजे के आगे मिल सकता है।

हम एक शांतिमय देश रहे हैं। लेकिन साथ ही साथ हमने निर्णय लिया कि शांति के माायने कमजोरी नहीं, शांति के मायने हैं कि हम डटकर अपने पैरों पर खड़े हों, आत्म-निर्भरता प्राप्त करें और अपनी सुरक्षा के लिए भी पूरी तौर पर तैयार हों। मैं चाहती हूं कि ये गुण हरेक हिन्दुस्तानी के दिल और दिमाग में रहें। महात्मा जी ने गरीबों से, बिना हथियार के लोगों से, एक महान शक्ति बना दी थी। हमारी वह शक्ति आज और भी बढ़ी हुई है, क्योंकि उस जनता को आज जानकारी भी है, योग्यता भी है, क्षमता भी है, तो इन सब गुणों को लेकर हम सब आगे बढ़ें।

मेरे सामने सब बच्चे यहां बैठे हैं, ये भविष्य के नागरिक हैं, जिनसे हम बहुत कुछ आशा रखते हैं। हम चाहते हैं कि उन्हें बराबर के मौके मिलें। आज जो ऊंच-नीच है, आज जो एक वर्ग और दूसरे वर्ग में अन्तर है, उसको हम कम करना चाहते हैं। हमें यह अन्तर कम करना है। जो हम बने हैं और जो हम बनना चाहते हैं, उसका अन्तर भी हमको खत्म करना है।

अब हम सब लोग मिलकर देश के नारे को पुकारेंगे--जय हिन्द।